नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

तकनीकी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता भारत

दुनिया की नई अर्थव्यवस्था में सेमीकंडक्टर वही स्थान रखते हैं, जो कभी औद्योगिक क्रांति के दौर में इस्पात और ऊर्जा का था. स्मार्टफोन, कंप्यूटर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रक्षा प्रणाली, ऑटोमोबाइल, चिकित्सा उपकरण और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी,लगभग हर आधुनिक तकनीक की नींव सेमीकंडक्टर चिप्स पर टिकी है. ऐसे समय में केंद्र सरकार द्वारा 1.27 लाख करोड़ रुपए की लागत से सेमी कॉन 2.0 कार्यक्रम को मंजूरी देना केवल एक औद्योगिक नीति नहीं, बल्कि भारत की तकनीकी आत्मनिर्भरता और आर्थिक सुरक्षा की दिशा में दूरगामी कदम है.

कोविड महामारी और उसके बाद वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में आई बाधाओं ने यह स्पष्ट कर दिया था कि चिप निर्माण में कुछ देशों पर अत्यधिक निर्भरता पूरी दुनिया के लिए जोखिम बन सकती है. भारत जैसे तेजी से बढ़ते डिजिटल राष्ट्र के लिए यह चुनौती और भी बड़ी थी. ऐसे में सरकार का लक्ष्य भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर निर्माण, डिजाइन और सप्लाई चेन का प्रमुख केंद्र बनाना समय की मांग भी है और रणनीतिक आवश्यकता भी. सेमीकॉन 2.0 की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल चिप निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरी वैल्यू चेन को मजबूत करने का प्रयास करता है. चिप डिजाइन, कच्चे माल और उपकरणों का निर्माण, फैब्रिकेशन प्लांट, एडवांस्ड पैकेजिंग, अनुसंधान एवं विकास तथा कुशल मानव संसाधन तैयार करने जैसे छह प्रमुख स्तंभ इस कार्यक्रम को व्यापक बनाते हैं. विशेष रूप से 315 विश्वविद्यालयों में हजारों छात्रों को अत्याधुनिक ईडीए टूल्स के माध्यम से प्रशिक्षित करने की योजना भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई गई है.

सरकार का अनुमान है कि इस नीति से लगभग 4 लाख करोड़ रुपए का निवेश आकर्षित होगा और 2 लाख करोड़ रुपए मूल्य का सेमीकंडक्टर उत्पादन संभव होगा. यदि यह लक्ष्य हासिल होता है तो भारत न केवल अपनी घरेलू जरूरतों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ेगा, बल्कि वैश्विक बाजार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा. इससे लाखों प्रत्यक्ष और परोक्ष रोजगार सृजित होंगे तथा उच्च तकनीक आधारित विनिर्माण को नई गति मिलेगी.

हालांकि इस महत्वाकांक्षी योजना की सफलता केवल बजट आवंटन से सुनिश्चित नहीं होगी. सेमीकंडक्टर उद्योग अत्यंत पूंजी-प्रधान, अनुसंधान आधारित और तकनीकी रूप से जटिल क्षेत्र है. इसमें निरंतर निवेश, विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा, पर्याप्त बिजली और जल आपूर्ति, कुशल कार्यबल तथा नीति की स्थिरता अनिवार्य है. वैश्विक कंपनियों का विश्वास जीतने के साथ-साथ भारतीय स्टार्टअप और अनुसंधान संस्थानों को भी दीर्घकालिक सहयोग देना होगा. कैबिनेट द्वारा मोबाइल विनिर्माण के लिए 62,500 करोड़ रुपए तथा वाराणसी के बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को दी गई मंजूरी यह संकेत देती है कि सरकार विनिर्माण और आधारभूत संरचना को समानांतर रूप से मजबूत करना चाहती है. यह दृष्टिकोण भारत को वैश्विक निवेश के लिए अधिक आकर्षक बना सकता है.

भारत आज डिजिटल अर्थव्यवस्था, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के नए युग में प्रवेश कर रहा है. सेमीकॉन 2.0 इस परिवर्तन की आधारशिला बन सकता है. यदि केंद्र और राज्य सरकारें, उद्योग जगत, शैक्षणिक संस्थान तथा अनुसंधान संगठन समन्वित प्रयास करें, तो आने वाले वर्षों में भारत केवल चिप्स का उपभोक्ता नहीं, बल्कि दुनिया का विश्वसनीय निर्माता और नवाचार का प्रमुख केंद्र बनकर उभर सकता है. यही वास्तविक तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में सबसे मजबूत कदम होगा.

महाकौशल की डायरी

लखन का मंत्रालय बदलने के पीछे चर्चाओं का दौर..!

अविनाश दीक्षित

बीते दिवस मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक बड़ा फैसला लेते हुए मंत्री लखन पटेल से पशुपालन एवं डेयरी विभाग का प्रभार वापस ले लिया. अब लखन पटेल केवल आनंद विभाग के मंत्री ही रहेंगे. पशुपालन विभाग वापस लिए जाने के बाद प्रतिक्रिया स्वरूप लखन पटेल इसे मुख्यमंत्री का विशेष अधिकार बता रहे हैं, मगर उनके विधानसभा क्षेत्र पथरिया में कई तरह की चर्चाएं चल रही हैं. सतही तौर पर कुछ लोग स्वावलंबी गौ शालाओं के लिए चुनी गई संस्थाओं से प्रदेश सरकार की असंतुष्टि से जोड़ रहे हैं. राजनीतिक गालियारों में कयास लगाए जा रहे हैं कि इस मामले को लेकर विगत तीन - चार माह से मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव उन्हें समझाइश दे रहे थे.

इस बीच स्वावलंबी गौ शालाओं के लिए संस्थाओं को जमीन आंवटन की शिकायत संघ और भाजपा के केंद्रीय मुख्यालय तक पहुंची थी , लिहाजा प्रदेश सरकार के मुखिया को उपरोक्त फैसला लेना पड़ा. इससे इतर एक चर्चा यह भी है कि दमोह जिले के जरारुधाम गौ अभ्यारण्य से कुछ किलोमीटर दूर एक अन्य गौशाला की शुरुआत होने जा रही है , जिसमे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बुलाने की तैयारी की जा रही थी. कहासुनी पर विश्वास करें तो कार्यक्रम का न्यौता प्रधानमंत्री को लखन पटेल स्वयं ही दे आए थे, वह भी मुख्यमंत्री की जानकारी में लाये बिना.

सूबे की राजधानी तक जब इसकी जानकारी पहुंची तो लखन पटेल के कामकाज के तौर - तरीकों पर सवाल उठे. मुख्यमंत्री की खामोश नाराज़गी के बीच भगवादल के केंद्रीय कार्यालय से भी कुछ ऐसे ही संदेश भोपाल पहुँचने की चर्चाएं सरगर्म हैं. हकीकत क्या है , यह तो मुख्यमंत्री और पार्टी के कर्णधार जानते हैं, परन्तु दमोह में लखन समर्थकों के चेहरों पर मायूसी के भाव स्पष्ट देखे जा रहे हैं, जबकि विरोधियों की आँखों में चमक दिखने लगी है.

ननि में दलाल फिर हुए सक्रिय

मध्यप्रदेश की सबसे पुरानी नगर निगम की कार्यप्रणाली की चर्चाएं फिर सरगर्म हो रहीं हैं जो इस मर्तबा काफी समय से खामोश दलालों की पुनः सक्रियता से जुड़ी है . दरअसल नगर निगम की पूर्व आयुक्त प्रीति यादव ने अपने कार्यकाल के दौरान भ्रष्टाचार और दलाली की शिकायतों के मद्देनजर कड़ा रुख अपनाते हुए नगर निगम मुख्यालय में बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी थी. उन्होंने स्पष्ट कहा था कि नगर निगम के कामकाज में बाहरी हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. उनके सख्त रुख के चलते तथाकथित कमीशनबाजों ने नगर निगम मुख्यालय से दूरी बना ली थी , किंतु कुछ महीनों पूर्व उनके स्थानांतरण पश्चात कथित दलालों की अधिकारियों के साथ गलबहियां फिर प्रारंभ हो गई हैं . नगर निगम गलियारों में चर्चा है कि एक व्यक्ति नियमित अंतराल पर नगर निगम मुख्यालय पहुँच रहा है और मकान निर्माण, नक्शा तथा भवन शाखा से संबंधित कार्यों में न केवल दखल दे रहा है, बल्कि इन विभागों के शीर्ष अधिकारियों के साथ मिलकर फाइलों का लेन देन भी कर रहा है . इसके अलावा एक अन्य अतिक्रमण विभाग के गोरखधंधे में मलाई काट रहा है . अवैध निर्माण से लेकर रेहड़ी - पटरी वालों से सेटिंग कर जमकर उगाही की जा रही है . दलालों - अधिकारियों की संगामित्ती का असर यह है कि जायज काम अटक रहे हैं और नाजायज कामों की फाइलें सरपट दौड़ रहीं हैं और मुख्यालय के मुखिया तथा जबलपुर के प्रथम नागरिक लगातार सुबह से शाम तक शहर विकास के तानेबाने बुन रहे हैं . इन हालातों के बीच नागरिक सवाल दाग़ रहे हैं कि नगर निगम के दो मुखियाओं की कसरत आम नागरिकों को ट्रैफिक जाम, धराशायी होती जर्जर इमारतें , जलभराव, जर्जर सड़कों से राहत दिलाएगी या फिर कमीशनबाजों की कारस्तानी हमेशा की तरह कोई ना कोई गुल खिलाती रहेगी .

एआई की असली दौड़

सॉफ्टवेयर नहीं आधारभूत संरचना का भविष्य

डॉ. एसके द्विवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर

> केवल डेटा सेंटर स्थापित कर देना पर्याप्त नहीं होगा. इसके साथ विश्वसनीय विद्युत आपूर्ति, हरित ऊर्जा, उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान संस्थान, कुशल मानव संसाधन, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और नवाचार को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ भी समान रूप से आवश्यक हैं. यदि इन सभी क्षेत्रों में समन्वित विकास नहीं हुआ, तो एआई की क्षमता का पूरा लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकेगा. भारत के पास विशाल युवा जनसंख्या, उत्कृष्ट इंजीनियरिंग प्रतिभा, तेजी से विकसित होता स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल उपभोक्ता बाजार है. यदि इन शक्तियों को मजबूत एआई अवसंरचना के साथ जोड़ा जाए, तो भारत केवल विदेशी तकनीकों का उपयोगकर्ता नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक एआई अर्थव्यवस्था का निर्माता और नेतृत्वकर्ता बन सकता है.

आज पूरी दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चर्चा कर रही है. चैटबॉट्स से लेकर स्वचालित चिकित्सा निदान, चित्र और वीडियो निर्माण से लेकर कंप्यूटर प्रोग्रामिंग तक, एआई ने जीवन के लगभग हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है. लेकिन इन आकर्षक अनुप्रयोगों के पीछे एक ऐसी आर्थिक क्रांति चल रही है, जिस पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जा रहा है. यह क्रांति सॉफ्टवेयर की नहीं, बल्कि डेटा सेंटर, सेमीकंडक्टर चिप्स, बिजली उत्पादन और डिजिटल नेटवर्क जैसी आधारभूत संरचनाओं की है.

इतिहास बताता है कि औद्योगिक क्रांतियाँ केवल नई तकनीकों से नहीं, बल्कि उन्हें सहारा देने वाली मजबूत अवसंरचना से सफल होती हैं. रेल क्रांति के पीछे रेलवे लाइनें थीं, बिजली क्रांति के पीछे विशाल विद्युत ग्रिड थे और इंटरनेट क्रांति के पीछे फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क. ठीक उसी प्रकार, एआई क्रांति की वास्तविक नींव भी उच्च क्षमता वाले डेटा सेंटर, अत्याधुनिक चिप्स और विश्वसनीय ऊर्जा तंत्र हैं. इसी कारण दुनिया की अग्रणी प्रौद्योगिकी कंपनियाँ अभूतपूर्व निवेश कर रही हैं. उद्योग के अनुमानों के अनुसार माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, अमेज़न, मेटा और ओरेकल जैसी कंपनियाँ वर्ष 2026 में एआई अवसंरचना पर 330 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक खर्च करेंगी. अकेले माइक्रोसॉफ्ट लगभग 100 अरब डॉलर के निवेश की तैयारी में है. वहीं, एनवीडिया जैसी कंपनी, जो एआई के लिए आवश्यक ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (त्नक्क) बनाती है, कुछ ही वर्षों में अपनी आय कई गुना बढ़ा चुकी है. यह संकेत है कि भविष्य की प्रतिस्पर्धा केवल बेहतर एआई मॉडल बनाने की नहीं, बल्कि उन्हें संचालित करने वाली आधारभूत संरचना पर नियंत्रण स्थापित करने की होगी.

एआई का विस्तार ऊर्जा क्षेत्र के लिए भी नई चुनौती बनकर उभरा है. आधुनिक एआई डेटा सेंटर अत्यधिक बिजली की खपत करते हैं. अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का अनुमान है कि वर्ष 2030 तक विश्व के डेटा सेंटरों की बिजली आवश्यकता दोगुनी से अधिक हो सकती है. यही कारण है कि अमेरिका और यूरोप की अनेक तकनीकी कंपनियाँ नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के साथ-साथ परमाणु ऊर्जा में भी निवेश कर रही हैं, ताकि भविष्य में ऊर्जा आपूर्ति बाधित न हो. भारत के लिए यह समय अत्यंत महत्वपूर्ण है. पिछले एक दशक में देश ने आधार, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस , डिजिलॉकर और ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स जैसी डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचनाओं के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है. डिजिटल भुगतान और ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में भारत आज विश्व के अग्रणी देशों में गिना जाता है. किंतु यदि भारत एआई महाशक्ति बनने का सपना देखता है, तो उसे डिजिटल सेवाओं से आगे बढ़कर भौतिक एआई अवसंरचना के निर्माण पर भी उतना ही ध्यान देना होगा.

सकारात्मक संकेत यह हैं कि भारत का डेटा सेंटर उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है. मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद, बेंगलुरु और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र नए डेटा सेंटर हब के रूप में उभर रहे हैं. सरकार की इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन योजना के अंतर्गत लगभग 76,000 करोड़ रुपये के प्रोत्साहन पैकेज ने भी चिप निर्माण के क्षेत्र में नई संभावनाएँ पैदा की हैं. यद्यपि भारत अभी ताइवान, दक्षिण कोरिया या अमेरिका की बराबरी नहीं कर सकता, लेकिन चिप डिजाइन, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स में उसकी विशेषज्ञता भविष्य के लिए मजबूत आधार प्रदान करती है.

हालाँकि इस उत्साह के बीच सावधानी भी आवश्यक है. इतिहास में डॉट-कॉम युग का अनुभव बताता है कि कभी-कभी तकनीकी क्रांति की अपेक्षा में अत्यधिक निवेश अल्पकालिक आर्थिक चुनौतियाँ भी पैदा कर सकता है. वर्तमान एआई निवेश को लेकर भी कुछ अर्थशास्त्री आशंका व्यक्त कर रहे हैं कि यदि एआई का व्यावसायिक विस्तार अपेक्षित गति से नहीं हुआ, तो निर्मित अवसंरचना का एक हिस्सा कुछ समय तक कम उपयोग में रह सकता है. फिर भी यह भी उतना ही सत्य है कि कोई भी बड़ी तकनीकी क्रांति प्रारंभिक चरण में आवश्यकता से अधिक निवेश की मांग करती है. रेलमार्ग, विद्युत ग्रिड और इंटरनेट नेटवर्क भी अपने शुरुआती वर्षों में कई लोगों को अनावश्यक प्रतीत हुए थे, किंतु वही आगे चलकर आधुनिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ बने.

लाखों 'लाड़की बहीण' क्यों हुई अपात्र?

महाराष्ट्र में केवायसी जांच के बाद लगभग 81 से 92 लाख महिलाएं 'लाडकी बहीण' योजना में अपात्र साबित हुई और उन्हें दी जाने वाली रकम पर रोक लगा दी गई. इन अपात्र लाभार्थियों ने करीब 14,000 करोड़ रुपये हजम कर लिए. उन्होंने जानबूझकर बनावटी दस्तावेज, आय का गलत विवरण देकर व आर्थिक स्थिति कमजोर बताकर इस योजना का लाभ उठाया. राज्य की 2 करोड़ 40 लाख महिलाओं ने 'लाडकी बहीण' योजना के लिए नाम दर्ज कराए थे. इससे राज्य के खजाने पर हजारों करोड़ रुपये का बोझ पड़ा. फलस्वरूप बुनियादी सुविधाओं जैसे सड़क निर्माण, सिंचाई व अन्य कल्याणकारी योजनाओं की निधि में कटौती करनी पड़ी थी. राज्य पर पहले ही कर्ज का बोझ था. इस नकद हस्तांतरण योजना से आर्थिक भार और बढ़ा. कैग ने अपनी ताजा रिपोर्ट में आलोचना करते हुए कहा कि सरकार ने अपने 29,693 करोड़ रुपये के स्वीकृत बजट से 3,541 करोड़ रुपये ज्यादा खर्च किए. महाराष्ट्र सरकार ने 28 जून 2024 को 'लाडकी बहीण' योजना शुरू की. इन 2 वर्षों में लाखों महिलाओं ने इसका गलत लाभ उठाया. एक ही घर की एक से ज्यादा महिलाओं ने आवेदन किया.

कुछ परिवारों की आय ढाई लाख रुपये से ज्यादा होने पर भी उन्होंने आय का गलत दाखिला दिया. सरकारी कर्मचारियों के रिश्तेदारों ने भी बहती गंगा में हाथ धो लिए. कुछ पुरुषों ने भी इस योजना का लाभ उठाया और उनके खाते में रकम जमा हुई. स्कूटर व कार का इस्तेमाल करने वाली महिलाएं भी 'लाडकी बहीण' बन गई थीं. गलती सरकार व प्रशासन की भी है. शुरुआत में ही आधार लिंक, आय का विवरण तथा राशन कार्ड के जरिए जांच-पड़ताल की गई होती तो सरकार के करोड़ों रुपये बच जाते. जब गलत लोगों ने फायदा उठाया तो कितनी ही गरीब व जरूरतमंद महिलाएं इस योजना से वंचित रह गई होंगी. अल्पावधि में बगैर जांच-पडताल किए करोड़ों महिलाओं को इस योजना से जोड़ लिया गया. विधानसभा चुनाव के लिए ईवीएम का बटन दबाने से पहले ही महिलाओं के खाते में रकम जमा हो गई. हर माह 1,500 रुपये डिपॉजिट होने लगे. महायुति की जीत में इस योजना का बड़ा योगदान था. यह प्रचार किया गया कि हमने बहनों को आर्थिक शक्ति प्रदान की है. अब अपात्रों से रकम वसूल करने के कानूनी कदम उठाए जाएंगे लेकिन सभी अपात्रों से पैसा वसूली असंभव ही है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

बहुत उपयोगी है रेलवे का सलून किसी में पूजा, कहीं हनीमून

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इस भ्रम में मत रहिएगा कि ट्रेन सिर्फ सफर करने के लिए होती है. लोगों के उपजाऊ मस्तिष्क ने ट्रेन के सलून के विविध उपयोग खोज निकाले हैं. वह नवविवाहित जोड़े के लिए हनीमून का ठिकाना और धर्मप्रेमियों के लिए भजन-पूजन व कर्मकांड का स्थल बन सकता है. पैसा दो और सलून का जैसा चाहो, इस्तेमाल करो.'

हमने कहा, 'आपके ध्यान में हाल ही में छपी एक खबर है, जिसमें वर्णन था कि ट्रेन के सलून का बाकायदा डेकोरेशन कर उसे पूरी साज-सज्जा के साथ हनीमून कक्ष का आकर्षक रूप दिया गया था. यह इसलिए किया गया ताकि नवविवाहित युगल को रोमांटिक फीलिंग आए. ट्रेन सफर का हर पल आनंददायक और अविस्मरणीय रहे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, किसी हिलस्टेशन जाकर हनीमून मनाना समझ में आता है. पहाड़ पर जाकर न्यूली मैरिड कपल गा सकता है- ये वादियां, ये फिजाएं बुला रही हैं तुम्हें! पर्वतों के पेड़ों पर शाम का बसेरा है, सुरमई उजाला है, चंपई अंधेरा है! चलती ट्रेन में आपाधापी करने की क्या जरूरत ?'

हमने कहा, 'पहाड़ की चोटी या किले की दीवार खतरनाक होती है. इल्जाम है कि ऐसी जगह पर कोई सोनम या रिया अपने प्रेमी की मदद से पति को धक्का देकर सीधे परलोक पहुंचा देती है. इसलिए ट्रेन के सलून में पूरे सुकून के साथ हनीमून मनाना सुरक्षित है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हनीमून की बजाय भाव-भक्ति से होने वाले अर्चन-पूजन व अनुष्ठान की चर्चा कीजिए. 'एक्स' पर जारी एक वीडियो में पंडित सहित अनेक श्रद्धालु चलती ट्रेन में पूजा करते दिखाई दे रहे हैं. इसमें रेल विभाग का कोई नियम आड़े नहीं आता. रेलवे' की सलून कार 3,08000 रुपये में बुक की गई और वहां धार्मिक कार्यक्रम किया गया.'

हमने कहा, 'आप तो सिर्फ ट्रेन की बात कर रहे हैं, धनवान भक्त क्रूज बुक करते हैं और उसमें किसी प्रसिद्ध कथावाचक या प्रवचनकार को साथ ले जाकर पूरी भव्यता से भागवत कथा करवाते हैं. तब समुद्र की लहरों के साथ मन में भक्ति की हिलोरें भी उठने लगती हैं. इधर जहाज डोलता है, उधर भजन के आनंद में भक्त भी झूमने लग जाते हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12321

-डॉ. सागर खादीवाला

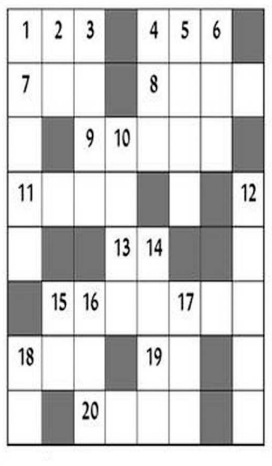

बाएं से दाएं

1. आम लोग, जनता (उर्दू) 4. कार्य, भाग्य, कृपा 7. प्रासाद, राजा का मकान 8. मच्छर आदि से बचने के लिए पलंग के चारों ओर लगाया जाने वाला जालीदार कपड़ा 9. आवभगत (उर्दू) 11. जिसे कुछ आता न हो 13. प्राप्त करना, हासिल करना 15. भारतीय क्रिकेट टीम के एक भूतपूर्व कप्तान 18. अधिकार, हस्तक्षेप 19. तीर, बाण, सरकंडा 20. गावतकिया, धनिकों के बैठने की गद्दी

ऊपर से नीचे

1. आकाशलता, अमरवल्लरी 2. प्रशंसासूचक अव्यय, शाबास, साधुवाद (उर्दू) 3. आल्हा ऊदल का चचेरा भाई 4. कटि, शरीर का मध्य भाग 5. रसवाला, स्वादिष्ट 6. घरवाली, ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द 10. रोगन फेरा हुआ एक प्रकार का मोटा टाट जिससे वर्षा या धूप से बचाव होता है 12. फिल्म गजनी का नायक 14. गरुड़, मयूर, सिंह (सं.) 15. वह अनुकूल तथा प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की इच्छा हो 16. नीलमणि, नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न 17. वर देने वाला, शुभ (सं.) 18. व्यथा, दुख, करुणा (उर्दू).

Solution 12320

अ	ल	क	नं	दा		ह	श्र
म	य			स	म		म
ल		त	म		हा		दा
ता	मी	र		नौ	का	य	न
स	ना		वि	ल	य		
	र		रू	सा		द	शा
आ		ज	प		पु	ला	व
पा	रा	य	ण		ल	ल	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भागदौड़ रहेगी. कार्यक्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम होगा. आंशिक सफ्लता मिलेगी. शारीरिक कष्ट से मन में व्यर्थ के विचार उत्पन्न होंगे. वर्ष के मध्य में नवीन योजनाओं की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा. तीर्थ यात्रा होगी. धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, और लगन रहेगी.वर्ष के अन्त में अतिनिकट व्यक्तियों को मदद करना पडेगी, जिसका परिणाम भी सुखद मिलेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट तथा मन व्यथित रहेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम से आंशिक सफ्लता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को किसी अपरिचित पर अधिक विश्वास करने से नुकसान होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों की यात्रा होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को राजनीति के कार्यो मेंसफ्लता मिलेगी.धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को व्यापार में बहुत भागदौड़ करना होगी, अतिनिकट व्यक्तिं को मदद करना पड़ेगी, जिसका परिणाम भी सुखद मिलेगा.

मेष- छोटे छोटे झगड़े बड़े विवाद का रूप ले सकते हैं. दिनचर्या अनियमित रहेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी. खानपान पर संयम रखें. विवाद को टालें.

वृषभ- वैभव के सामान पर बड़े खर्च की संभावना है. अपने काम को वरीयता से निपटाने का प्रयास करें. परिश्रम अधिक करना पड़ेगा. नियमितता का ध्यान रखें.

मिथुन- जोखिम के कार्यो में नुकसान हो सकता है. सावधानी बांछनीय. यश, मान सम्मान प्राप्त होगा. अधिकारी वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे. संतोष बना रहेगा.

कर्क- बुजुर्गो के मार्गदर्शन से अच्छी सफ्लता मिलेगी. पारिवारिक सहयोग भरपूर मिलेगा. धार्मिक कार्यो मेंसुखरहेगा. परिश्रमकी अधिकता रहेगी.

सिंह- जो भी कार्य शुरू करेंगे, उसमें सफ्लता मिलेगी. अधूरी योजना को फिर से शुरू करेंगें. व्यर्थ के तनाव को टालें. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकारी रहेगी.

कन्या- बुजुर्गों के मार्गदर्शन से लाभ का योग है. पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा. व्यापार की योजना कारगर रहेगी. मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी.

तुला- प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता के आसार हैं. विवादास्पद मामले सुलझ सकते हैं. आपकी बुद्धिमानी और सूझबूझ से बिगड़ा काम बनेगा.

वृश्चिक- दूसरों के मामलों में दखल से बचें. अटके काम को पूरा करने में दूसरों की मदद मिलेगी. शिक्षा के क्षेत्र में सफ्लता प्राप्त होगी. नियमितता का ध्यान रखें.

धनु- वैभव विलासिता के कार्यो में खर्च होगा. खरीददारी में विशेष रूचि रहेगी. वाहन चलाते समय सावधानी रखें. आकस्मिक धन लाभ का योग है.

मकर- कार्यस्थल पर आपके कामकाज की मिलीजुली प्रतिक्रिया रहेगी. जमकर जायजाद प्रापर्टी के कार्यो में सफ्लता मिलेगी. संबंधों में आपकी मधुरता रहेगी.

कुम्भ- किसी पर भी भरोसा सोच समझकर करें. परिणय चर्चाओं में सफ्लता के आसार है. नौकरी के कार्यो में अधिकता रहेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी.

मीन- कार्यक्षेत्र में आ रही परेशानियां दूर होंगी. परिचितों के कारण अपना काम करने में मुश्किल आ सकती है. आय से अधिक व्यय होगा. लाभ सामान्य रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक निडर, साहसी, महत्वाकांक्षी एवं आकर्षक व्यक्तित्व का होगा. बचपन में स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. अस्थिर बुद्धि का होने से उटपटांग बात करेगा. विद्या प्रारंभ में कम एवं बाद में अच्छी रहेगी. मित्रों की संख्या अधिक होगी. माता पिता का आदर करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

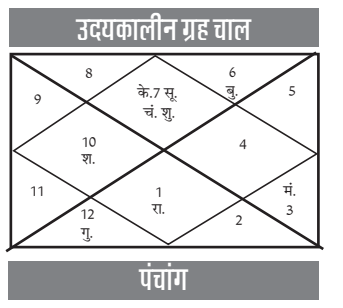

पंचांग

रा.मि. 26 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल तृतीया भृगुवासरे दिन 9/38, मघा नक्षत्रे रात 10/42, सिद्धि योगे प्रातः 5/41 तदुपरि व्यतिपात योगे रात 3/31, गर करणे सू.उ. 5/17, सू.अ. 6/43, चन्द्रचार सिंह, पर्व- वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल तृतीया को मघा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव तमें 30 से 40 रूपये मंदी होगी. धान्यों के भाव में अस्थिरता रहेगी. कपास, वस्त्र जूट, पाट, बारदाना, के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 3441 है.

SUDOKU 7453

			1					6
7		2		5				9
		4			2	7	5	
5	7				9		1	8
				6				
6	1		3				2	4
	5	1	9			8		
2				8		9		1
9					3			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7452

1	9	3	2	4	6	5	8	7
4	7	2	5	1	8	3	6	9
6	5	8	7	3	9	1	2	4
3	8	9	4	5	1	2	7	6
2	4	7	6	9	3	8	1	5
5	1	6	8	7	2	4	9	3
8	2	4	9	6	5	7	3	1
7	6	1	3	2	4	9	5	8
9	3	5	1	8	7	6	4	2